

2012-13 की आर्थिक समीक्षा की मुख्य विशेषताएं

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष डॉ. सी. रंगराजन ने आज नई दिल्ली में संवाददाता सम्मेलन में '2012-13 की आर्थिक समीक्षा' का दस्तावेज़ जारी किया। इस दस्तावेज़ की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-

➤ 2013-14 में आर्थिक वृद्धि 6.4 प्रतिशत रहने का अनुमान

सीएसओ के अग्रिम अनुमान में 2012-13 में कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर 1.8 प्रतिशत रखी गई। सामान्य और विशेष सामान्य मॉनसून रहने पर कृषि क्षेत्र की वृद्धि दर में सुधार होने की संभावना है और इसके 2013-14 में 3.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

सीएसओ के अग्रिम अनुमान में उद्योग क्षेत्र की वृद्धि दर (विनिर्माण, खनन और उत्खनन, बिजली, गैस, जल आपूर्ति और निर्माण सहित) 2012-13 में 3.1 प्रतिशत रखी गई। 2013-14 में इसके 4.9 प्रतिशत पर रहने का अनुमान है। 2013-14 में विनिर्माण क्षेत्र की वृद्धि दर 4 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

- सीएसओ के अग्रिम अनुमान में 2012-13 में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर 6.6 प्रतिशत रखी गई। 2013-14 में इसके 7.7 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

➤ **वैश्विक स्थिति:** हालांकि 2013 में वैश्विक वृद्धि के रफ्तार पकड़ने का अनुमान लगाया गया लेकिन यह साधारण स्तर पर बनी रहेगी। ऐसे परिदृश्य में भारत की अनुमानित वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत अपेक्षाकृत उच्च और काफी अच्छी है।

➤ **संरचनागत कारक:**

➤ निवेश दर के 2012-13 में सकल घरेलू उत्पाद के 35.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। वृद्धिशील पूंजी परिणाम अनुपात (इंक्रिमेंटल कैपिटल आउटपुट रेशियो ,आईसीओआर) के अपने लगभग 4.0 ऐतिहासिक स्तर से काफी अधिक बढ़ने से पूंजी की उत्पादकता में तेज़ गिरावट आई है। 2011-12 तथा 2012-13 के लिए प्रगणित आईसीओआर 5.4 से 11.4 के स्तर पर रही जो कि इस पर निर्भर करती है कि अनुपात की गणना कैसे की गई। ऐसा लगता है कि परियोजनाओं में संचित निवेश पूंजी से अनुरूप परिणाम नहीं निकल रहे हैं।

घरेलू बचत दर 2012-13 में सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 30.8 प्रतिशत रहने का अनुमान था। पिछले कुछ वर्षों में घरेलू बचत दर में कमी का कारण सरकार की नकारात्मक बचत में वृद्धि होना, निजी कॉरपोरेट की लाभप्रदता में कमी आना तथा परिवारों के कुल वित्तीय बचत में कमी आना है।

➤ कॉरपोरेट वित्तीय परिणाम के रूझान

2009-10 तथा 2010-11 में कॉरपोरेट आंकड़ों से व्युत्पन्न वास्तविक शुद्ध बिक्री वृद्धि आंकड़े आईआईपी की तुलना में एसीआई अंकों के करीब थे। यदि कॉरपोरेट अंक विनिर्माण क्षेत्र के लिए बेहतर मागदर्शक हैं तो 2011-12 और 2012-13 दोनों के लिए सीएसओ के सकल घरेलू उत्पाद के अनुमान में बढ़ोतरी हो सकती है।

➤ विदेशी क्षेत्र: इस समय चालू खाता घाटा (सीएडी) को नियंत्रित करना हमारा मुख्य लक्ष्य है।

- चालू खाता घाटा वर्ष 2012-13 में 94 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 5.1 प्रतिशत) होने का अनुमान है और वर्ष 2013-14 में इसे 100 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 4.7 प्रतिशत) करने का लक्ष्य है।
- वाणिज्य वस्तु व्यापार घाटा 2012-13 में 200 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 10.9 प्रतिशत) रहने का अनुमान है और 2013-14 में इसे 213 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 9.9 प्रतिशत) करने का लक्ष्य है।
- शुद्ध अदृश्य आमदनी 2012-13 में 105.8 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 5.7 प्रतिशत) रहने का अनुमान है और 2013-14 में इसे 113 बिलियन डॉलर (सकल घरेलू उत्पाद का 5.3 प्रतिशत) करने का लक्ष्य है।

• पूंजीगत प्रवाह

- अनुमान है कि 2012-13 के लिए विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का शुद्ध प्रवाह 18 बिलियन डॉलर (अंतः प्रवाह 26 बिलियन डॉलर और बाह्य-प्रवाह 8 बिलियन डॉलर) था। 2013-14 के लिए ईएसी ने उच्च अंतः प्रवाह 36 बिलियन डॉलर का लक्ष्य रखा है। आशा है कि एफडीआई का बाह्य-प्रवाह भी बढ़ेगा जिसके परिणामस्वरूप एफडीआई का शुद्ध अंतः प्रवाह 24 बिलियन डॉलर होगा।
- विदेशी संस्थागत निवेश (एफआईआई) का अंतः प्रवाह 2012-13 की पहली तिमाही में कम रहा लेकिन दूसरी और तीसरी तिमाही में इसमें तेजी आई। लेकिन समूचे वर्ष के लिए पोर्टफोलियो अंतः प्रवाह के 24 बिलियन डॉलर के आस-पास रहने का अनुमान है। वर्ष 2013-14 में पोर्टफोलियो पूंजीगत प्रवाह 18 बिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य है।

- अनुमान है कि वर्ष 2012-13 में ऋण मद के अधीन कुल अंतः प्रवाह लगभग 30 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है। इसमें अधिकांश रूप से विदेशी व्यावसायिक उधार (ईसीबी) और लघु अवधि ऋण शामिल है। वर्ष 2013-14 के लिए 36 बिलियन डॉलर का लक्ष्य है।
- वर्ष 2012-13 के लिए बैंकों से होने वाला कुल पूंजीगत अंतः प्रवाह 24 बिलियन डॉलर रहने का अनुमान है और वर्ष 2013-14 के लिए इसे 22 बिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य है।

➤ मुद्रा स्फीति

- आशा है कि वर्ष 2013-14 में थोक मूल्य सूचकांक की मुद्रा स्फीति 6.0 प्रतिशत के आस-पास रहेगी। इसमें प्राथमिक खाद्य मुद्रा स्फीति 8 प्रतिशत के आस-पास, ईंधन लगभग 11 प्रतिशत और तैयार माल लगभग 4 प्रतिशत रहेगा।
- वर्ष 2012-13 के अंत में मुद्रा स्फीति की अनंतिम संख्या 5.96 प्रतिशत रही।

➤ वित्तीय स्थिति

- वर्ष 2012-13 के लिए केन्द्र का वित्तीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद के 5.2 प्रतिशत के बराबर रहने का अनुमान है। संशोधित अनुमानों के अनुसार 2012-13 में यह घाटा 520,924 करोड़ रुपये का रहा और बजट अनुमानों के अनुसार 2013-14 में यह 542,499 करोड़ रुपये रहने की संभावना है।
- 2012-13 में केन्द्रीय सब्सिडी की कुल राशि 257,654 करोड़ रुपये (सकल घरेलू उत्पाद का 2.6 प्रतिशत) थी, लेकिन 2013-14 में यह कम होकर 231,084 करोड़ रुपये रहने की उम्मीद है। इसका कारण पेट्रोलियम सब्सिडी का कम होना है, जिसके कारण पिछले वर्षों में हमारा वित्तीय घाटा बढ़ता रहा है।
- जैसे-जैसे विकास दर बढ़ेगी, उसके साथ ही राजस्व वसूली भी बढ़ने की उम्मीद है। 2013-14 के बजट अनुमानों में राजस्व में 19 प्रतिशत की वृद्धि दर का लक्ष्य रखा गया है।
- जहां तक व्यय की बात है, पेट्रोलियम सब्सिडी पर नियंत्रण एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसके परिणाम स्वरूप कुल मिलाकर खर्च बजट सीमा के अंदर रहने की उम्मीद है।
- वित्तीय सुदृढीकरण की प्रक्रिया के लिए बजट ने मजबूत नींव रख दी है, जिससे निरंतर आधार पर उच्च विकास दर प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।

निष्कर्ष

- विकास दर धीमी हुई है और विशेष रूप से औद्योगिक विकास दर में कमी आई है, लेकिन लगता है कि यह गिरावट अपने निचले स्तर तक पहुंच चुकी है। पिछले वर्ष की पाँच प्रतिशत के मुकाबले 2013-14 में आर्थिक विकास दर बढ़कर 6.4 प्रतिशत हो जाने की

उम्मीद है। निवेश और बचत दरें कम हुई हैं, लेकिन जितनी निवेश में कमी आई है, आर्थिक विकास दर में उसके मुकाबले ज्यादा कमी आई है। इसका मुख्य कारण यह है कि पूंजी परिसंपत्तियां तो बढ़ी हैं, लेकिन इसका लाभ अर्थव्यवस्था को नहीं हो पाया है। परियोजनाओं में लगी पूंजी के अनुरूप लाभ नहीं मिला है, क्योंकि परियोजनाओं को पूरा करने की गति धीमी रही है। इस संबंध में नीतिगत और प्रशासनिक कदम, जैसा कि हाल में निवेश के बारे में एक कैबिनेट समिति बनाई गई है, परियोजनाओं को तेजी से पूरा करने के रास्तों की रूकावटों को दूर करने में सहायक हो सकते हैं। निवेश की जो मौजूदा दर है, उससे अगले कुछ समय में आर्थिक विकास दर 7.5 प्रतिशत से 8 प्रतिशत तक पहुंच सकती है तथा अधिक बचत और निवेश से हम फिर से आर्थिक विकास की ऊंची दर प्राप्त कर सकते हैं, जैसा कि हम पहले प्राप्त कर चुके हैं।

- मुद्रास्फीति की दर लगातार ऊंची बनी हुई है, लेकिन इस बात के निश्चित संकेत हैं कि थोक मूल्य सूचकांक पर आधारित मुद्रास्फीति की दर कम हो रही है। गैर-खाद्य विनिर्माण पर आधारित मुद्रास्फीति लगभग उचित स्तर पर बनी हुई है। जैसे ही मुद्रास्फीति नीचे आएगी, तो इससे आर्थिक विकास दर को बढ़ाने में मुद्रा नीति और सहायक सिद्ध होगी।
- वित्तीय सुदृढीकरण की रूपरेखा बिल्कुल तैयार कर ली गई है। सरकार वित्तीय घाटे को नियंत्रण में रखने के लिए कृत संकल्प है। फिर भी मौजूदा खाता घाटा चिंता की बात है, बावजूद इसके कि घाटे के लिए वित्तीय व्यवस्था अब तक कोई समस्या नहीं रही है। कुछ समय में हम ऐसे कदम उठा सकेंगे, जो पूंजी प्रवाह को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। मध्यम अवधि तक हमें अपने मौजूदा खाते घाटे को सामान्य स्तर तक लाना होगा।
- अगला दशक भारत के लिए एक महत्वपूर्ण दशक होगा। यदि हम आठ से नौ प्रतिशत वार्षिक की दर से विकास दर हासिल करते हैं, तो हम वर्ष 2025 तक मध्यम दर्जे की आमदनी वाला देश की गिनती में आ जाएंगे। यह आर्थिक विकास की तेज दर होगी, जिससे हम अपने कई महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकेंगे।

➤ ध्यान देने योग्य मुद्दे

- परियोजनाओं की शीघ्र स्वीकृति : निवेश के बारे में कैबिनेट समिति के गठन से परियोजनाओं को जल्दी मंजूरी देने में मदद मिली है, लेकिन अगले कुछ महीनों में हमें कुछ और कदम भी उठाने होंगे, ताकि नये निवेश का रास्ता खुले। वर्तमान संदर्भ में कोयला, बिजली, सड़कें, रेलवे और बंदरगाहों जैसे बड़े बुनियादी ढांचों वाले क्षेत्रों में, जो ज्यादातर सार्वजनिक क्षेत्र या सरकारी-निजी भागीदारी क्षेत्र में हैं, में उत्पादन और क्षमता निर्माण के लक्ष्य प्राप्त करने से निजी निवेश और अधिक तेज आर्थिक विकास दर को बहुत बढ़ावा मिलेगा।
- मौजूदा खाते घाटे में कमी : तेल आयात और सोना, व्यापार घाटे की विशाल बढ़ोतरी का कारण है। तेल आयात की राशि को नियंत्रण में रखने के लिए पेट्रोलियम उत्पादों के मामले में कीमतों और सब्सिडी से संबंधित सुधारों को पूरा करना होगा। व्यापार और सेवाएं दोनों

के निर्यात को बढ़ाना बहुत आवश्यक है, जैसे ही मुद्रास्फीति नियंत्रण में आती है, सोने के लिए लोगों की ललक कम हो जाएगी। वित्तीय परिसंपत्तियों में आकर्षक लाभ से भी सोने की मांग को कम करने में सहायता मिलेगी।

- **पूंजी खाते का प्रबंधन** : मौजूदा खाते घाटे के लिए वित्तीय प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए पूंजी प्रवाह को बढ़ाना होगा और जहां जरूरी होगा प्रक्रियाओं को सुचारु बनाना होगा।
- **ऊर्जा उपलब्धता में सुधार** : तेल और प्राकृतिक गैस के आयात पर हमारी निर्भरता और हमारे विदेशी भुगतान की स्थिति में गहरा संबंध है। इसलिए ऊर्जा अर्थव्यवस्था के मामले में हमें इसके सभी पहलुओं-उत्पादन, संप्रेषण और अंतिम उपयोग में सुधार के लिए कदम उठाने होंगे। घरेलू कोयला उत्पादन में बढ़ोतरी से काफी लाभ होगा। तेल की खोज और उत्पादन बढ़ाकर हमें घरेलू आपूर्ति बढ़ाने होगी।
- **मुद्रास्फीति पर नियंत्रण** : आवश्यक खाद्य वस्तुओं से संबंधित मुद्रास्फीति को कम स्तर पर कायम रखने के लिए हमें आपूर्ति प्रबंधन और मूल्य निर्धारण के प्रबंधन को सुचारु बनाना होगा।
- **कृषि वितरण और आपूर्ति शृंखलाएं** - कई राज्यों में लागू कृषि उपज विपणन समिति अधिनियम से किसानों द्वारा अपनी उपज की बिक्री पर रोक लगाने से आपूर्ति शृंखला के आधुनिकीकरण में रुकावट आई है और आवश्यक खाद्य पदार्थों से संबंधित मुद्रास्फीति में वृद्धि होती है। इस संबंध में नियामक बाधाओं को हटाने की आवश्यकता है।
- **बचत योजनाओं का विस्तार** : पिछले कुछ वर्षों में बचत योजनाओं के विस्तार, विशेष रूप से म्युचुअल फंड और जीवन बीमा के विस्तार में गंभीर रुकावटें आई हैं। म्युचुअल फंड की योजनाएं विशेष रूप से छोटे निवेशकों के मामले में कुछ समय तक लाभकारी नहीं रही हैं और बीमा में प्रीमियम की वृद्धि दर 2010-11 और 2011-12 में (-) 10 प्रतिशत रही, हालांकि इससे पिछले वर्षों में यह ज्यादा थी। और अधिक आकर्षक बचत स्कीमों के जरिए और अनुकूल माहौल बनाकर वित्तीय परिसंपत्तियों में निवेश में इस गिरावट के रुख को पलटने की आवश्यकता है।

तालिका 1

स्थिर (2004-05) मूल्य पर वर्ष-दर-वर्ष पर वृद्धि दर

यूनिट: प्रतिशत, जब तक उल्लिखित न किया गया हो

	वार्षिक दरें	2005-06	2006-07	2007-08	2008-09	2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
								<i>त्वरित अनुमान</i>	अग्रिम अनुमान	<i>प्रस्तावित</i>
1	कृषि और संबंधित गतिविधियां	5.1	4.2	5.8	0.1	0.8	7.9	3.6	1.8	3.5
2	खनन और उत्खनन	1.3	7.5	3.7	2.1	5.9	4.9	-0.6	0.4	2.3
3	विनिर्माण	10.1	14.3	10.3	4.3	11.3	9.7	2.7	1.9	4.0
4	बिजली, गैस, जल आपूर्ति	7.1	9.3	8.3	4.6	6.2	5.2	6.5	4.9	6.4
5	निर्माण	12.8	10.3	10.8	5.3	6.7	10.2	5.6	5.9	7.0
6	व्यापार, होटल, परिवहन, भंडारण और संचार	12.0	11.6	10.9	7.5	10.4	12.3	7.0	5.2	7.6
7	वित्त, बीमा, रियल एस्टेट और कारोबार सेवाएं	12.6	14.0	12.0	12.0	9.7	10.1	11.7	8.6	9.0
8	सामुदायिक और व्यक्तिगत सेवाएं	7.1	2.8	6.9	12.5	11.7	4.3	6.0	6.8	6.0
9	जीडीपी (कारक लागत)	9.5	9.6	9.3	6.7	8.6	9.3	6.2	5.0	6.4
10	कृषि क्षेत्र	5.1	4.2	5.8	0.1	0.8	7.9	3.6	1.8	3.5
11	उद्योग (2 + 3 + 4 + 5)	9.7	12.2	9.7	4.4	9.2	9.2	3.5	3.1	4.9
12	सेवाएं (6 + 7 + 8)	10.9	10.1	10.3	10.0	10.5	9.8	8.2	6.6	7.7
13	कृषि से भिन्न जीडीपी (9 - 1)	10.5	10.8	10.1	8.1	10.1	9.6	6.6	5.5	6.8
14	जीडीपी (कारक लागत) प्रति व्यक्ति	7.8	8.0	7.8	5.2	7.1	7.8	4.8	3.7	5.1
कुछ परिमाण										
15	जीडीपी कारक लागत-2004/05 मूल्य, लाख करोड़ रूपए में (ट्रिलियन)	32.5	35.6	39.0	41.6	45.2	49.4	52.4	55.0	58.5
16	जीडीपी बाजार और मौजूदा मूल्य लाख करोड़ रूपए में	36.9	42.9	49.9	56.3	64.8	78.0	89.7	100.3	113.7

	(ट्रिलियन)									
17	जीडीपी बाज़ार और मौजूदा मूल्य, बिलियन अमरीकी डॉलर में	834	949	1,241	1,234	1,370	1,715	1,865	1,847	2,126
18	जनसंख्या , मिलियन में	1,106	1,122	1,138	1,154	1,170	1,186	1,202	1,217	1,232
19	जीडीपी बाज़ार मूल्य प्रति व्यक्ति मौजूदा मूल्य , रूपए में	33,394	38,277	43,823	48,787	55,366	65,728	74,667	82,400	92,290
20	जीडीपी बाज़ार मूल्य प्रति व्यक्ति मूल्य , मौजूदा अमरीकी डॉलर में	754	846	1,090	1,069	1,171	1,446	1,551	1,518	1,725

तालिका 2

भुगतान के वास्तविक और अनुमानित बकाया

बिलियन अमरीकी डॉलर	2004/05	2005/06	2006/07	2007/08	2008/09	2009/10	2010/11	2011/12	2012/13 *	2013/14 *
व्यापार निर्यात	85.2	105.2	128.9	166.2	189.0	182.4	250.5	309.8	301.1	329.7
व्यापार आयात	118.9	157.1	190.7	257.6	308.5	300.6	381.1	499.5	501.1	542.7
व्यापार संतुलन	-33.7	-51.9	-61.8	-91.5	-119.5	-118.2	-130.6	-189.8	-200.0	-213.0
	-4.7%	-6.2%	-6.5%	-7.4%	-9.7%	-8.6%	-7.6%	-10.2%	-10.9%	-9.9%
नेट इंविजिबल	31.2	42.0	52.2	75.7	91.6	79.7	84.6	111.6	105.8	113.0
	4.3%	5.0%	5.5%	6.1%	7.4%	5.8%	4.9%	6.0%	5.7%	5.3%
ओ/डब्ल्यू तथा बीपीओ	14.7	23.8	27.7	37.2	47.0	41.5	49.6	60.1	62.4	72.0
निजी	20.5	24.5	29.8	41.7	44.6	53.5	53.1	63.5	65.6	69.0
निवेश आय	-4.1	-4.1	-6.8	-4.4	-6.6	-5.5	-16.4	-16.5	-24.0	-28.0

चालू खाता	-2.5	-9.9	-9.6	-15.7	-27.9	-38.5	-45.9	-78.2	-94.2	-100.0
	-0.3%	-1.2%	-1.0%	-1.3%	-2.3%	-2.8%	-2.7%	-4.2%	-5.1%	-4.7%
विदेशी निवेश	13.0	15.5	14.8	45.0	3.5	51.2	38.0	39.2	41.5	42.0
ओईसीएफडीआई (कुल)	3.7	3.0	7.7	15.4	17.5	18.8	7.7	22.1	17.8	24.0
इनबाउंड एफडीआई	6.0	8.9	22.7	34.2	35.0	33.1	24.0	33.0	26.1	36.0
आउटबाउंड एफडीआई	2.3	5.9	15.0	18.8	17.5	14.4	16.3	10.9	8.3	12.0
पोर्टफोलियो पूंजी	9.3	12.5	7.1	29.6	-14.0	32.4	30.3	17.2	23.7	18.0
ऋण	10.9	7.9	24.5	41.9	4.1	14.3	27.9	19.3	30.5	36.0
बैंकिंग पूंजी	3.9	1.4	1.9	11.8	-3.2	1.5	5.0	16.0	24.2	22.0
अन्य पूंजी	0.7	1.2	4.2	9.5	4.5	-13.0	-10.4	-6.9	-2.0	0.0
पूंजी खाता	28.0	25.5	45.2	108.0	8.7	53.4	60.0	67.8	94.2	100.0
	3.9%	3.1%	4.8%	8.7%	0.7%	3.9%	3.5%	3.6%	5.1%	4.7%
त्रुटियां तथा चूक	0.6	-0.5	1.0	1.2	1.1	-1.6	-2.6	-2.4	2.5	0.0
भंडारों की अनुवृद्धि	26.2	15.1	36.6	92.2	-18.1	13.3	11.5	-12.8	2.5	0.0
	3.6%	1.8%	3.9%	7.4%	-1.5%	1.0%	0.7%	-0.7%	0.1%	0.0%

नोट: * 2012-13 के लिए अनुमानित और 2013-14 के लिए प्रस्तावित कॉलम।